तीसरा सप्ताह:

ज्वाला स्वरूप स्थिति की अनुभूति

1) ज्वाला-रूप बनने का मुख्य और सहज पुरुषार्थ - सदा यही धुन रहे कि अब वापिस घर जाना है और सबको साथ ले जाना है। इस स्मृति से स्वत: ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति की आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जायेंगे। यह स्थिति याद को ज्वालारूप बना देगी।

2) ज्वाला स्वरुप याद अर्थात् लाइट हाउस और माइट हाउस स्थिति। विशेष ज्ञान-स्वरुप के अनुभवी बन शक्तिशाली बनो। अपनी शुभ वृत्ति व कल्याण की वृत्ति और शक्तिशाली वातावरण द्वारा अनेक तड़पती हुई, भटकती हुई, आत्माओं को आनन्द, शान्ति और शक्ति की अनुभूति कराओ।

3) जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है। ऐसे आप मास्टर ज्ञान सूर्य बन अपने तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराओ। जैसे सूर्य की किरणें चारों ओर फैलती हैं, ऐसे आप मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर रहो तो शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करेंगे।

4) ज्वाला स्वरूप याद के लिए मन और बुद्धि दोनों को एक तो पॉवरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। इससे बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।

5) कोई भी कार्य करते वा बात करते बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करो। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को, चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करो तब बिन्दू रूप की पॉवरफुल स्टेज पर स्थित हो सकेंगे।

6) पवित्रता की धारणा जब सम्पूर्ण रूप में होगी तब आपके श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति लगन की अग्नि प्रज्जवलित करेगी, उस अग्नि में सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। फिर जो सोचेंगे वही होगा, विंहग मार्ग की सेवा स्वत: हो जायेगी।

7) याद को शक्तिशाली बनाने के लिए विस्तार में जाते सार की स्थिति में स्थित रहो। विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो। साधना अर्थात् शक्तिशाली याद। निरन्तर बाप के साथ दिल का सम्बन्ध।

Week 3: The Experience of the Volcanic Form.

1. The main and easy effort to become the volcanic form is always to have the concern: We now have to return home and take everyone back with us. With this awareness, you will automatically be able to go beyond all relationships and all attractions of matter, that is, you will become a detached observer. This stage will make your remembrance volcanic.
2. To have volcanic remembrance means to have the stage of being a light-and-might-house. Especially be experienced in the form of knowledge and become powerful. With your pure and benevolent attitude and a powerful atmosphere, give wandering, desperate souls the experience of bliss, peace and power.
3. Just as the sun gives the experience of light and many other perishable attainments to the world, in the same way, become master suns of knowledge and with your tapaswi form, give others the experience of attainment. Just as the rays of the sun spread everywhere, in the same way, stay in the stage of being a master almighty authority and you will experience the rays of powers and specialities spreading everywhere.
4. In order to have volcanic remembrance, both your mind and intellect need to have a powerful brake and also the power to steer. Through this, the power of your intellect and any other energy will not be wasted, but will instead accumulate. To the extent that you accumulate, accordingly, your powers to discern and decide will increase.
5. While carrying out any task, control the traffic of your thoughts and put a stop to them every now and then. For even one minute, practise stopping the thoughts of your mind and the work you are carrying out through your body and only then will you be able to remain stable in a powerful stage of the point-form.
6. When you have the dharna of purity in its complete form, the power of your elevated thoughts will ignite the fire of love. All rubbish will be burnt in that fire. Then, only that which you think about will happen and fast service will automatically take place.
7. In order to make remembrance powerful, while going into expansion, remain stable in the stage of the essence. Do not forget the essence in the expansion. Eat, drink, do service, but do not forget being detached. Spiritual endeavour means to have powerful remembrance and a constant relationship of the heart with the Father.